मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 6

BHDE–143

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी (सी. बी. सी. एस.)

(बी. ए. एच.डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

बी.एच.डी.ई.-143 : प्रेमचन्द

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सम्मुख दिए गए हैं।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) माँ-बाप का इकलौता लड़का बड़ा भाग्यशाली होता है। उसे मीठे पदार्थ खूब खाने को मिलते हैं, किन्तु कड़वी

ताड़ना कभी नहीं मिलती। सदन बाल्यकाल में ढीठ, हठी और लड़ाकू था। वयस्क होने पर वह आलसी, क्रोधी और बड़ा उद्दण्ड हो गया। माँ–बाप को यह सब मंजूर था। वह चाहे कितना ही बिगड़ जाए, पर आँख के सामने से टले। उससे एक दिन का बिछोह भी न सह सकते थे। पद्मसिंह ने कितनी ही बार अनुरोध किया कि इसे मेरे साथ आने दीजिए, मैं इसका नाम किसी अंग्रेजी मदरसे में लिखा दूँगा, किन्तु माँ–बाप ने कभी स्वीकार नहीं किया।

(ख) हमें अपनी रुचि और प्रवृत्ति के अनुकूल विषय चुन लेने चाहिए और विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना चाहिए। हम जिस आर्थिक अवस्था में जिन्दगी बिता रहे हैं, उसमें यह काम कठिन अवश्य है, पर हमारा

आदर्श ऊँचा रहना चाहिए। हम पहाड़ की चोटी तक न पहुँच सकेंगे तो कमरे तक तो पहुँच ही जाएँगे, जो जमीन पर पड़े रहने से कहीं अच्छा है। अगर हमारा अंतर प्रेम की ज्योति से प्रकाशित हो और सेवा का आदर्श हमारे सामने हो तो ऐसी कोई कठिनाई नहीं जिस पर हम विजय न प्राप्त कर सकें।

(ग) इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी। कम्पनी की फौजें लखनऊ की तरफ बढ़ी चली आती थीं। शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी जरा भी फिक्र न थी। वे घर से आते तो गलियों में होकर। डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाए, जो

बेगार में पकड़े जाएँ। हजारों रुपये सालाना की जागीर मुफ़्त ही हजम करना चाहते थे।

(घ) प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था—इसे कहते हैं न्याय! यह मनुष्य का काम नहीं, पंच में परमेश्वर वास करते हैं, यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है ? थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आये और उनके गले लिपटकर बोले—भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा प्राण-घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जबान से खुदा बोलता है।

(ङ) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोनों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, फिर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

2. प्रेमचन्द के उपन्यासों का परिचय दीजिए। 16

3. 'सेवासदन' की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। 16

4. 'साहित्य का उद्देश्य' के वैचारिक पक्ष का विवेचन कीजिए। 16

5. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी की संरचनागत विशेषताएँ बताइए। 16

6. 'पंच परमेश्वर' कहानी की कथावस्तु की चर्चा कीजिए। 16

7. 'दो बैलों की कथा' की भाषा एवं शिल्पगत विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 16

8. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 2×8=16

(क) 'पूस की रात' कहानी का प्रतिपाद्य

(ख) प्रेमचन्द का वैचारिक गद्य

(ग) 'पद्मसिंह' की चारित्रिक विशेषताएँ

(घ) 'संग्राम' नाटक

× × × × ×